SONAM BALA
(DEPT. OF GEOGRAPHY)
A.N.D. COLLEGE, SHAHPUR PATORY, SAMASTIPUR
23rd MAY 2020
SATURDAY

FOR B.A.–II (Hons)
PAPER-3, GEOGRAPHY OF INDIA & BIHAR
LECTURE–51

UNIT–3 IRON & STEET INDUSTRY IN INDIA

भारत में लौह-इस्पात उद्योग

भारत में तीव्र गति से लौह-इस्पात उद्योग के विकसित होने के कारण औद्योगिक विकास को बल मिला। लौह-इस्पात उद्योग एक आधारभूत उद्योग है। लगभग सभी प्रकार के उद्योग अपनी मूल आधारिक अवसंरचना के लिए मुख्य रूप से लौह-इस्पात उद्योग पर निर्भर करते हैं। लौहे के बिना कृषि में प्रयुक्त होने वाला औजार नहीं बन सकता। लौह-इस्पात उद्योग के लिए लौह अयस्क (मैग्नेटाइट, हेमेटाइट, लिमोनाइट एवं सिडेराइट) और कोककारी कोयला के अलावा चूनापत्थर, डोलोमाइट, मैंगनिज आदि कच्चे माल की भी आवश्यकता होती है।

ये सभी कच्चे माल भार ह्रास वाले (स्थूल) होते हैं। इसलिए लौह-इस्पात उद्योग कच्चे माल के स्त्रोतों के निकट ही स्थापित होते हैं। भारत में उत्तरी उड़ीसा, छत्तीसगढ़, झारखंड और पश्चिमी बंगाल के भागों को समाहित करते हुए एक अर्धचंद्राकार प्रदेश है जो कि उच्च कोटि के लौह अयस्क, अच्छे गुणवत्ता वाले कोककारी कोयला और अन्य जरूरत की सामग्रियों से समृद्ध है। इसी वजह से यहाँ लौह-इस्पात उद्योग की स्थापना के साथ-साथ शुरुआत भी हुई। भारतीय लौह-इस्पात उद्योग के अंतर्गत बड़े एकीकृत इस्पात कारखाने और छोटी इस्पात मिलें भी सम्मिलित हैं। इसके अंतर्गत द्वितीयक उत्पादक, ढलाई मिलें और आनुषंगिक उद्योग भी आते हैं।

Scanned by CamScanner

भारत में लौह-इस्पात उद्योग की प्रगति

भारत में लौहा-इस्पात उद्योग को स्थापित करने का प्रथम प्रयास 1779 में किया गया था। 1808 में ईस्ट इंडिया कंपनी ने मद्रास में एक लौहे का कारखाना स्थापित किया। 1830 में मद्रास में जोशिया हीथ के द्वारा एक कारखाना स्थापित करने का प्रयत्न किया गया, उपरोक्त सभी प्रयास असफल रहे। 1871 में 'कुल्टी' नामक स्थान पर 'बराकर आयरन वर्क्स' की स्थापना हुई। बाद में यह कारखाना बंगाल आयरन कंपनी के अधिकार में आ गया। 1937 से यह इंडियन आयरन स्टील कंपनी इस्को (IISCO) के अधिकार में है आ गया। 1907 में साकची (झारखंड) नामक स्थान पर जमशेद जी टाटा द्वारा एक कारखाना 'टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (TISCO, टिस्को) स्थापित किया गया। इसमें समस्त आधुनिक तकनीकें प्रयुक्त हुई। 1911 में यहाँ लौह-अयस्क तथा 1913 में यहाँ इस्पात तैयार किया गया। 1923 में यहाँ 1.6 लाख टन लौह अयस्क तैयार किया गया। 1923 में भद्रावती में 'मैसूर आयरन वर्क्स' मिस्को (MISCO) की स्थापना हुई। भारत में आधुनिक ढंग से लौहा-इस्पात उद्योग बीसवीं शताब्दी में ही स्थापित हुआ।

द्वितीय विश्व युद्ध से पहले 1939 में देश का इस्पात उत्पादन 8 लाख मीट्रिक टन से कुछ अधिक था। देश में लोहा-इस्पात के केवल तीन बड़े कारखाने — आसनसोल, जमशेदपुर तथा भद्रावती में थे। स्वतंत्रता के बाद लौह-इस्पात उद्योग पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा विकसित हुआ।

प्रथम पंचवर्षीय योजना — लौह-इस्पात को विकसित करने की दिशा में कार्य नहीं हुआ।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956-61) — 10 लाख टन क्षमता वाले अलग-अलग इस्पात केंद्र स्थापित

Scanned by CamScanner

हुए — ① भिलाई ② दुर्गापुर ③ राउरकेला। निजी क्षेत्र में स्थापित TISCO, जमशेदपुर एवं IISCO, आसनसोल की उत्पादन क्षमता को क्रमशः दुगना करके 20 लाख टन एवं 10 लाख टन बढ़ाने का उद्देश्य बनाया गया था। 1956 और 1962 में सार्वजनिक क्षेत्र में इस्पात गृहों की स्थापना हुई। निजी क्षेत्र में कारखानों का विस्तार 1959 में पूरा किया गया।

तीसरी पंचवर्षीय योजना — सरकारी क्षेत्र के तीन इस्पात कारखानों का विस्तार और बोकारो में एक और इस्पात कारखाने की स्थापना की ओर ध्यान दिया गया।

चौथी पंचवर्षीय योजना — इसका उद्देश्य वर्तमान इस्पात कारखानों की क्षमता का अधिकतम उपयोग करना था। सलेम (तमिलनाडु), विजयनगर (कर्नाटक) एवं विशाखापत्तनम (आंध्र प्रदेश) में नए इस्पात कारखाने स्थापित करके उत्पादन क्षमता को इतना बढ़ाना था कि पाँचवी योजना में पूरा किया जा सके।

किंतु पाँचवी पंचवर्षीय योजना निश्चित समय से एक वर्ष पहले ही 31 मार्च, 1978 को समाप्त हो गई। यह संभव हुआ, 26 फरवरी, 1978 को बोकारो कारखाने के चालू हो जाने से, उत्पादन क्षमता में 17 लाख टन की वृद्धि हो गई। चौथी योजना के अंत (31 मार्च, 1974) तक कुल स्थापित इस्पात संयंत्रों का उत्पादन 89 लाख टन था, पाँचवी योजना के अंत तक (31 मार्च, 1978) 106 लाख टन तथा मार्च 1980 तक 116 लाख टन हो गया। 17 जुलाई 1976 को भारत सरकार द्वारा IISCO, इंडियन आयरन एंड स्टील कंपनी पर पूर्ण स्वामित्व प्राप्त कर लिया गया। सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र में लोहा-इस्पात के उत्पादन एवं विकास हेतु भारत सरकार द्वारा 1973 में 'स्टील आथोरिटी ऑफ इंडिया

Scanned by CamScanner

लिमिटेड, सेल (SAIL) की स्थापना की गई। इसके अंतर्गत इस्पात तथा अन्य संबंधित उद्योगों में सभी शेयर 'सेल' के अधिकार में है। उद्योग में निवेश एवं कुल व्यवस्था सेल द्वारा की जाती है। सार्वजनिक क्षेत्र के कारखानों का राजकीय प्रशासन, हिंदुस्तान स्टील लिमिटेड, (HSL) के अधिकार में है जोकि अब सेल की ही एक शाखा है।

Scanned by CamScanner